मेन्स मास्टर

अनब्रेकेबल

संदर्भ

• चीन की आर्थिक वृद्धि और भू-राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं भारत के प्रभाव को चुनौती देती हैं: चीन के विकास ने उसे अपने पड़ोस में भारत के ऐतिहासिक प्रभुत्व को चुनौती देने की अनुमति दी है। बीजिंग अपने पक्ष में क्षेत्रीय गतिशीलता को फिर से आकार देना चाहता है।

• चीन दक्षिण एशिया में वित्तीय शक्ति का लाभ उठाता है: भारत की तुलना में काफी बड़ी अर्थव्यवस्था के साथ, चीन भारत के पड़ोसियों के साथ संबंध बनाने में वित्तीय लाभ रखता है। यह अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए इस आर्थिक लाभ का उपयोग करना चाहता है।

• बीजिंग बहुआयामी प्रभाव रणनीति का उपयोग करता है: चीन के दृष्टिकोण में वित्तीय संसाधनों को तैनात करना, लक्षित देशों के भीतर प्रमुख व्यक्तियों को लक्षित करना और अपने लाभ के लिए जनमत को आकार देना शामिल है। यह बहुआयामी रणनीति छोटे देशों के लिए चीन के प्रभाव का विरोध करना कठिन बनाती है।

पृष्ठभूमि

• **भूटान-भारत:** विश्वास पर आधारित एक मजबूत साझेदारी: भूटान और भारत आपसी समझ, सहयोग और साझा इतिहास की विशेषता वाले एक अद्वितीय बंधन को साझा करते हैं। यह भूटान को भारत के क्षेत्रीय सुरक्षा ढांचे के लिए महत्वपूर्ण बनाता है।

• **चीन भूटान के साथ यथास्थिति को बाधित करना चाहता है:** थिम्पू के साथ औपचारिक संबंधों की कमी के बावजूद, चीन सक्रिय रूप से भूटान पर कूटनीतिक मान्यता और बीजिंग के अनुकूल सीमा समझौते के लिए दबाव बनाने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य क्षेत्र में भारत की स्थिति को कमजोर करना है।

• **डोकलाम गतिरोध:** तनाव की एक कड़ी याद: 2017 के डोकलाम की घटना ने भूटान के खिलाफ अपने दावों को आगे बढ़ाने और क्षेत्र में भारत के सुरक्षा हितों को सीधे चुनौती देने के लिए अपने लाभ का उपयोग करने की चीन की इच्छा को उजागर किया।

भूटान का महत्व

• **सुरक्षा कवच के रूप में भूटान**

• **भौगोलिक बफर जोन:** हिमालय के भीतर भूटान का स्थान चीन और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के बीच एक प्राकृतिक रक्षात्मक अवरोध बनाता है। यह बफर तिब्बत में चीन की सैन्य उपस्थिति से दबाव को अवशोषित करता है और बीजिंग की दक्षिण की ओर आसानी से शक्ति प्रक्षेपण करने की क्षमता को सीमित करता है।

• **सिलीगुड़ी कॉरिडोर की सुरक्षा:** सिलीगुड़ी कॉरिडोर भूटान की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इस क्षेत्र में किसी भी व्यवधान के भारत के लिए गंभीर परिणाम होंगे (नीचे समझाया गया है)। भूटान की मौजूदगी चीन के लिए इस क्षेत्र में किसी भी तरह की कार्रवाई पर विचार करना काफी मुश्किल बना देती है।

• **पूर्व चेतावनी प्रणाली:** भारत के साथ भूटान के घनिष्ठ संबंध प्रभावी संचार और चीन की ओर से किसी भी आक्रामक इरादे की संभावित पूर्व चेतावनी की अनुमति देते हैं। इससे भारत को कूटनीतिक कार्रवाई या रक्षात्मक तैयारी के लिए बहुमूल्य समय मिल जाता है।

सिलीगुड़ी कॉरिडोर: एक महत्वपूर्ण जीवनरेखा

• **भारत के हृदय स्थल को जोड़ना:** सिलीगुड़ी कॉरिडोर भारत की मुख्य भूमि और उसके सात पूर्वोत्तर राज्यों (अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा) के बीच एकमात्र भूमि पुल है।

• **आर्थिक निर्भरता:** खाद्य, ईंधन और निर्माण सामग्री सहित सभी आवश्यक आपूर्तियाँ इस कॉरिडोर के माध्यम से भारत के पूर्वोत्तर तक पहुँचती हैं। इसके बाधित होने से इन राज्यों में आर्थिक जीवन ठप्प हो जाएगा।

• **सैन्य मेधता:** भारत-चीन सीमा पर संभावित आक्रमण का मुकाबला करने के लिए भारतीय सैनिकों और सैन्य आपूर्ति को ले जाने के लिए यह कॉरिडोर महत्वपूर्ण है। इस लिंक को तोड़ने से क्षेत्र में भारत की सेना प्रक्षेपण और रक्षा क्षमताओं में गंभीर बाधा आएगी।

चुम्बी घाटी और तिब्बत कारक

• **ऊँचाई का लाभ:** तिब्बत पर चीन का नियंत्रण चुम्बी घाटी तक आसान पहुँच के साथ ऊँचाई का लाभ प्रदान करता है, जो सिलीगुड़ी कॉरिडोर को देखता है।

• **भारत के गले पर खंजर:** चुम्बी घाटी की स्थिति चीन को भारत की सुरक्षा को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचाने की क्षमता प्रदान करती है। चीन की तीव्र प्रगति संभावित रूप से सिलीगुड़ी कॉरिडोर को काट सकती है, जिससे पूर्वोत्तर अलग-थलग पड़ सकता है।

• **बुनियादी ढाँचे का निर्माण:** तिब्बत और चुम्बी घाटी में चीन द्वारा सड़कों, रेल नेटवर्क और संभावित सैन्य सुविधाओं का विकास कॉरिडोर की ओर तेज़ी से बल भेजने की उसकी क्षमता को बढ़ाता है, जिससे भारत के लिए चिंताएँ बढ़ जाती हैं।

भारत की ऐतिहासिक विफलता

• **अतीत में निहित आत्मसंतुष्टि:** स्वतंत्रता के बाद, भारत ने अक्सर अपने आकार, ऐतिहासिक संबंधों और अपने कई पड़ोसियों के स्वतंत्रता आंदोलनों का समर्थन करने में भूमिका के कारण दक्षिण एशिया में एक प्रमुख स्थान ग्रहण किया। इससे इस क्षेत्र के साथ जुड़ाव में आत्मसंतुष्टि और तत्परता की कमी हुई।

• **चीन की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को कम आंकना:** दशकों तक भारत ने मुख्य रूप से पाकिस्तान के साथ अपनी प्रतिद्वंद्विता और आंतरिक चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया। चीन की आर्थिक वृद्धि और दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव विकसित करने पर उसका ध्यान रणनीतिक खतरे के संदर्भ में पूरी तरह से नहीं समझा गया।

• **सद्भावना पर ध्यान दें, ठोस लाभ पर नहीं:** भारत अक्सर अपने ऐतिहासिक भूमिका और पड़ोसियों के साथ साझा सांस्कृतिक संबंधों पर निर्भर करता था, लेकिन इन संबंधों को मजबूत करने के लिए ठोस आर्थिक और विकासात्मक लाभ प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित नहीं करता था।

भारत का पाठ्यक्रम सुधार

• **"पड़ोसी पहले" नीति:** जयशंकर ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि भारत की विदेश नीति को अपने पड़ोस से शुरू करना चाहिए। यह एक प्रमुख विश्व शक्ति के रूप में भारत की भूमिका पर केंद्रित ऐतिहासिक रूप से अधिक वैश्विक दृष्टिकोण से एक उल्लेखनीय बदलाव है।

• **सिद्धांत से अधिक व्यावहारिकता:** भारत स्वीकार करता है कि वह इस क्षेत्र में चीन की उपस्थिति को खत्म नहीं कर सकता। चीन को बाहर करने के लिए निरर्थक प्रतिस्पर्धा के बजाय, भारत पड़ोसियों के साथ अपने स्वयं के जुड़ाव को गहरा करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जो अधिक लाभकारी और विश्वसनीय साझेदारी प्रदान करता है।

• **गुटनिरपेक्षता से परे:** जबकि गुटनिरपेक्षता के तत्व बने हुए हैं, जयशंकर इस बात पर जोर देते हैं कि भारत को अतीत से कठोर वैचारिक ढांचे के बजाय कई शक्तियों के साथ काम करने और अपने स्वयं के राष्ट्रीय हितों के आधार पर स्थिति लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

नया फोकस: आर्थिक एकीकरण, संप्रभुता और सुरक्षा

• **आधार के रूप में आर्थिक भागीदारी:** भारत बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, व्यापार समझौतों और पारस्परिक रूप से लाभकारी पहलों पर जोर देता है। इसका लक्ष्य भारत और उसके पड़ोसियों को आर्थिक अंतरनिर्भरता के जाल में बांधना है, जिससे भारत के साथ भागीदारी उनके विकास के लिए अपरिहार्य हो जाए।

• **संप्रभुता का सम्मान:** इस क्षेत्र में प्रभुत्व की चाहत रखने वाले भारत की कोई भी छवि अब नहीं रही। दिल्ली अपने छोटे पड़ोसियों की संप्रभुता के सम्मान पर जोर देता है और "बड़े भाई" के रवैये के बजाय सच्ची भागीदारी के आधार पर संबंध बनाने का प्रयास करता है।

• **सुरक्षा सहयोग:** यह स्वीकार करते हुए कि सुरक्षा के बिना आर्थिक विकास नहीं हो सकता, भारत सुरक्षा संवाद, संयुक्त अभ्यास, पड़ोसी देशों में रक्षा बलों की क्षमता निर्माण और साझा खतरों का मुकाबला करने के लिए खुफिया जानकारी साझा करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

प्रधानमंत्री मोदी की हाल की भूटान यात्रा

• **एकजुटता का प्रतीक:** यह यात्रा भूटान के विकास और सुरक्षा के लिए भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत करती है, जो बढ़ते चीनी दबाव के सामने एकजुट मोर्चे का प्रदर्शन करती है।

• **आर्थिक बढ़ावा:** भूटानी विकास पहलों के लिए वित्तीय सहायता में भारत की उल्लेखनीय वृद्धि का उद्देश्य आर्थिक संबंधों को गहरा करना और चीन द्वारा दिए जाने वाले किसी भी आर्थिक प्रोत्साहन को संतुलित करना है।

• **कनेक्टिविटी फोकस:** बुनियादी ढांचे और डिजिटल कनेक्टिविटी परियोजनाएं क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा देती हैं, व्यापार और यात्रा को बढ़ावा देती हैं, जिससे भूटान और भारत दोनों को लाभ होता है।

• **सुरक्षा और समन्वय:** बढ़ी हुई बातचीत और रणनीतिक समन्वय के माध्यम से सुरक्षा सहयोग को मजबूत करना भूटान के लिए भारत के समर्थन और क्षेत्रीय सुरक्षा के बारे में साझा चिंताओं का संदेश देता है।

संदिग्ध आचरण

• **संदर्भ:**

• तमिलनाडु के राज्यपाल आर.एन. रवि का आचरण जांच के दायरे में आ गया है, क्योंकि उन्होंने के. पोनमुडी को राज्य मंत्रिमंडल में फिर से शामिल करने से इनकार कर दिया है, जबकि भ्रष्टाचार के मामले में न्यायालय द्वारा स्थगन दिए जाने के बाद पोनमुडी की पात्रता बहाल कर दी गई थी।

• यह घटना राज्यपालों द्वारा संवैधानिक सिद्धांतों के पालन और लोकतांत्रिक संस्थाओं के समुचित संचालन के बारे में व्यापक चिंताओं को उजागर करती है।

• **पृष्ठभूमि:**

• रवि के कार्य, जिनमें लंबित विधेयकों से निपटना और कानूनी फैसलों की व्याख्या करना शामिल है, न्यायिक समीक्षा के अधीन रहे हैं, जिससे संवैधानिक आदेशों को बनाए रखने में अनिच्छा का एक पैटर्न सामने आया है।

• लंबित विधेयकों पर कार्रवाई में देरी के पिछले उदाहरण संवैधानिक कर्तव्यों की अवहेलना करने की प्रवृत्ति को रेखांकित करते हैं, जिससे राज्यपाल के आचरण के बारे में चिंताएं और बढ़ जाती हैं।

• **मुद्दे:**

• राज्यपाल का अतिक्रमण

• रवि द्वारा पोनमुडी को उनकी कानूनी योग्यता के बावजूद पुनः शामिल करने से इनकार करना राज्यपाल की शक्तियों के अतिक्रमण को दर्शाता है।

• यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करता है और कानून के शासन में जनता के विश्वास को खत्म करता है।

• राज्यपाल केंद्र के एजेंट के रूप में:
• ऐसी चिंताएँ हैं कि राज्यपाल संवैधानिक अखंडता के निष्पक्ष संरक्षक के रूप में कार्य करने के बजाय केंद्र सरकार के एजेंडों से प्रभावित हो सकते हैं।
• इससे राज्यपालों की नियुक्ति प्रक्रिया और शासन के संघीय ढांचे को बनाए रखने में उनकी भूमिका पर सवाल उठते हैं।

• संभावित समाधान:
• संवैधानिक मानदंडों को सुदृढ़ करना:
• संवैधानिक सिद्धांतों का पालन सुनिश्चित करने के लिए राज्यपाल के आचरण के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश स्थापित किए जाने चाहिए।
• कानून के शासन को बनाए रखने और राज्यपाल के अतिक्रमण को रोकने के लिए जवाबदेही तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए।

• नियुक्ति मानदंडों की समीक्षा:
• केंद्र को राज्यपालों की नियुक्ति के मानदंडों का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए, संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने और राज्य सरकारों की स्वायत्तता का सम्मान करने के लिए प्रतिबद्ध व्यक्तियों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

• आगे का रास्ता:
• केंद्र को स्थिति की गंभीरता को स्वीकार करना चाहिए और इसे संबोधित करने के लिए निर्णायक कार्रवाई करनी चाहिए।
• संवैधानिक सिद्धांतों की लगातार अवहेलना करने वाले राज्यपालों की जगह ऐसे व्यक्तियों को नियुक्त किया जाना चाहिए जो कानून के शासन को प्राथमिकता देते हों।
• संवैधानिक मानदंडों के प्रति सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा देकर, लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास बहाल किया जा सकता है, जिससे अंततः भारत के लोकतांत्रिक ढांचे को मजबूती मिलेगी।

भारत में टीबी नियंत्रण के लिए व्यक्ति-केंद्रित समाधान की आवश्यकता

संदर्भ
• क्षय रोग (टीबी) भारत में एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा बना हुआ है, जो हर साल लाखों लोगों को प्रभावित करता है।
• टीबी उन्मूलन के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य मौजूद हैं, लेकिन प्रगति धीमी है।
• पारंपरिक दृष्टिकोण चिकित्सा पहलुओं को प्राथमिकता देते हैं, टीबी से प्रभावित लोगों के जीवित अनुभवों को अनदेखा करते हैं।

पृष्ठभूमि
• भारत के टीबी नियंत्रण प्रयास चिकित्साकरण पर निर्भर रहे हैं, अक्सर बीमारी के मानवीय, आर्थिक और सामाजिक आयामों की उपेक्षा करते हैं।
• टीबी से बचे लोग और अधिवक्ता रोगी की जरूरतों को प्राथमिकता देने के लिए नीतिगत बदलावों की मांग कर रहे हैं।

भारत में टीबी की वर्तमान स्थिति

• प्रमुख चुनौतियाँ:
○ कुशल निदान और उपचार तक सीमित पहुँच, विशेष रूप से ग्रामीण और कम सेवा वाले क्षेत्रों में।
○ गुणवत्ता-आश्वासन वाली दवाओं और निदान की अपर्याप्त उपलब्धता।
○ टीबी रोगियों के खिलाफ लगातार कलंक और भेदभाव।
○ गरीबी और कुपोषण जैसे सामाजिक-आर्थिक कारक टीबी महामारी को बढ़ावा दे रहे हैं।

भारत में टीबी के कारण
• जैविक: टीबी जीवाणु (माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस)।
• सामाजिक: गरीबी, भीड़भाड़ वाली रहने की स्थिति, खराब पोषण, स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच।
• पर्यावरण: खराब वेंटिलेशन, वायु प्रदूषण।

संभावित समाधान
• व्यक्ति-केंद्रित देखभाल को प्राथमिकता दें: रोगी को देखभाल प्रक्रिया के केंद्र में रखें:
○ मानसिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं को संबोधित करना और लिंग-उत्तरदायी देखभाल सुनिश्चित करना।
○ पोषण संबंधी सहायता प्रदान करना।
○ सटीक निदान, विशेष रूप से आणविक परीक्षण तक पहुँच का विस्तार करना।
○ फ्रंटलाइन हेल्थकेयर कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित समुदाय-आधारित टीबी देखभाल मॉडल को सशक्त बनाना।
• सामाजिक निर्धारकों को संबोधित करें:
○ गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम।
○ बेहतर वेंटिलेशन के लिए आवास की स्थिति में सुधार करें।
○ टीबी रोगियों और जोखिम वाले लोगों के लिए पोषण संबंधी सहायता।

• प्रौद्योगिकी का लाभ उठाएँ:
○ बेहतर निदान, उपचार अनुपालन और निगरानी के लिए एआई और डिजिटल स्वास्थ्य उपकरण लागू करें।
○ बेहतर टीबी टीके विकसित करने में निवेश करें।

आगे की राह
भारत को टीबी नियंत्रण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। व्यक्ति-केंद्रित समाधानों को प्राथमिकता देकर, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं से निपटकर और नवाचार को अपनाकर, देश टीबी को खत्म करने और अपने नागरिकों के लिए एक स्वस्थ भविष्य बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है।

प्रीलिम्स बूस्टर

केरल में कण्ठमाला रोग के पुनः उभरने पर

- 🦠 केरल में कण्ठमाला का प्रकोप बढ़ गया है, इस वर्ष 15,000 से अधिक मामले सामने आए हैं, जिससे मेनिंगोएन्सेफलाइटिस और अग्नाशयशोथ जैसी जटिलताओं के बारे में चिंताएँ बढ़ गई हैं, जिससे बच्चों और किशोरों में वायरल संक्रमण के प्रसार को रोकने के लिए प्रभावी नियंत्रण उपायों और टीकाकरण रणनीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।
- 💉 टीके से रोकथाम योग्य होने के बावजूद, कण्ठमाला को भारत के सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि इसका सार्वजनिक स्वास्थ्य महत्व कम माना जाता है, जिससे टीकाकरण कवरेज को बढ़ाने और कण्ठमाला के मामलों के पुनरुत्थान से निपटने के लिए कण्ठमाला-खसरा-रूबेला (MMR) वैक्सीन को शामिल करने की माँग की जा रही है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ सामुदायिक प्रकोप हो रहा है।
- 🏥 स्वास्थ्य अधिकारी जन जागरूकता, संक्रमित व्यक्तियों को अलग करने और कण्ठमाला संचरण को रोकने के लिए टीकाकरण कवरेज में सुधार के महत्व पर जोर देते हैं, प्रजनन स्वास्थ्य पर रोग के प्रभाव को दूर करने और कण्ठमाला संक्रमण से जुड़ी दीर्घकालिक जटिलताओं को रोकने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हैं।
- 🌐 विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कण्ठमाला नियंत्रण रणनीतियों को मौजूदा खसरा उन्मूलन और रूबेला नियंत्रण प्रयासों के साथ एकीकृत करने की सिफारिश की है, कण्ठमाला के प्रसार को कम करने और रोकथाम योग्य संक्रामक रोगों के खिलाफ सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा में टीकाकरण कार्यक्रमों के महत्व को रेखांकित किया है।

संगीता कलानिधि विवाद

- 🎶 अपनी कलात्मक प्रतिभा और सक्रियता के लिए प्रसिद्ध प्रसिद्ध गायक टीएम कृष्णा को उनके गैर-अनुरूपतावादी विचारों और सामाजिक परिवर्तन की वकालत, कर्नाटक संगीत समुदाय के भीतर जाति, लिंग और शक्ति गतिशीलता को चुनौती देने और सुधार और नवीनीकरण पर बहस को प्रज्वलित करने के लिए परंपरावादियों और द्वारपालों की आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।
- 🎤 कृष्णा की कलात्मक स्वतंत्रता और अखंडता की खोज संगीत से परे है, जिसमें हाशिए के समुदायों की वकालत, सार्वजनिक जुड़ाव और नीति वकालत शामिल है, जिससे संगीत बिरादरी के भीतर रूढ़िवादी हलकों से विवाद और प्रतिक्रिया हुई है।
- 🏆 मद्रास संगीत अकादमी द्वारा कृष्णा को प्रतिष्ठित संगीत कलानिधि पुरस्कार से सम्मानित करने के निर्णय ने कुछ कर्नाटक संगीतकारों के बीच असंतोष को जन्म दिया है, जिसके कारण अकादमी के वार्षिक सम्मेलन से नाम वापस ले लिया गया है, जो कृष्णा की सक्रियता, राजनीतिक बयानों और संगीत के प्रति अपरंपरागत दृष्टिकोण पर तनाव को दर्शाता है।
- 🌟 आलोचना और बहिष्कार का सामना करने के बावजूद, सामाजिक कारणों के लिए कृष्णा की सक्रियता और वकालत उनकी कलात्मक यात्रा का अभिन्न अंग रही है, जो उन संगीतकारों की विरासत के साथ प्रतिध्वनित होती है जिन्होंने अपनी कला का उपयोग सामाजिक टिप्पणी और परिवर्तन, चुनौतीपूर्ण मानदंडों और संगीत और सक्रियता के माध्यम से समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए एक मंच के रूप में किया।

- 🎶 मद्रास संगीत अकादमी द्वारा प्रस्तुत संगीत कलानिधि पुरस्कार, भारत में कर्नाटक संगीत का सर्वोच्च सम्मान है, जो कला के रूप में असाधारण प्रतिभा, निपुणता और आजीवन योगदान को मान्यता देता है, जिसका शीर्षक "संगीत और कला का खजाना" है और पुरस्कार विजेताओं के लिए अपार सम्मान का प्रतीक है।
- 🏆 1942 में स्थापित, यह पुरस्कार कर्नाटक संगीत के भीतर विविध विषयों के संगीतकारों को दिया जाता है, जिसमें गायक, वादक और संगीतकार शामिल हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कठोर चयन प्रक्रिया का पालन किया जाता है कि योग्य कलाकारों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए पहचाना जाए।
- 🌟 संगीत कलानिधि पुरस्कार के उल्लेखनीय प्राप्तकर्ताओं में एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी, सेम्मनगुडी श्रीनिवास अय्यर और अरियाकुडी रामानुज अयंगर के साथ-साथ अरुणा साईराम और नेवेली संथानगोपालन जैसे समकालीन कलाकारों ने कर्नाटक संगीत की समृद्ध विरासत और उत्कृष्टता का जश्न मनाने में पुरस्कार की भूमिका पर प्रकाश डाला।
- 🎵 मद्रास संगीत अकादमी द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह और वार्षिक सम्मेलन कर्नाटक संगीत में कलात्मक उपलब्धि के उच्चतम मानकों को सम्मानित करने और प्रदर्शित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है, जो उन संगीतकारों के समर्पण, कौशल और कलात्मकता को दर्शाता है जिन्होंने शैली की विरासत और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।